कपास नई खोज़

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र

देखें: www.cicr.org.in

अंक: 4 खंड: 8 अगस्ट 24-30, 2014

वैज्ञानिक वार्ता

डॉ.के.पी.एम.दमयंति, प्रधान वैज्ञानिक, के.क.अ.सं., कोयंबत्तूर ने पालिनोसिस में दि.25.8.2014 को साप्ताहिक संगोष्ठी में भाषण दिया । पालिनोसिस पौधों की पराग के वजह से प्रभानित एक अलर्जी है । उन्होंने अलर्जी के इस प्रकार के लक्षण, कारण, निदान विधियों और उपचार का भी विस्तार समझाया। हवा से फैल रहे पराग आमतौर पर पालिनोसिस के रूप में जाना जाता है और कई अलर्जी का मुख्य कारण हैं । अलर्जी प्रतिरक्षा प्रणाली के एक से अधिक प्रतिक्रिया करता है । पराग गण जल्द से जल्द ज्ञात अलर्जीन्स हैं और ऊपरी विषयों के बीच रुग्णता का प्रमुख स्रोत हैं। पराग गण हवा के महत्वपूर्ण घटकों में से एक का गठन और सांस की बीमारी का प्रमुख प्रेरणा का एजेंट के रूप में माना जाता है.

भारत जलवायू विविध क्षेत्र होने से अलर्जी कारकों में विशाल विविधता है और यह एक जलवायु विविधतापूर्ण देश है। पार्तीनियम एस्टेरिका (संयुक्त) परिवार का एक सदस्य एवं मेक्सिको और मध्य और दक्षिण अमेरिका के मूल निवासी है और दुनिया भर में एक तेजी से परेशानी खरपतवार होता जा रहा है । रागावीड,पार्तीनियम खरपत्वार, सांटा मारिया, फीवेरफ्यू, ,कांग्रेस घास, गाजर घास, सफेद शीर्ष आदि हैं। इसके निशान एवं लक्षण नेत्रश्लेष्मलाशोथ, खाँसी, बुखार सिर दर्द और घुटन की निस्तब्धता, बिगड़ा गंध, बिगड़ा स्वाद, खुजली आँखें, खुजली मुंह, खुजली नाक, खुजली त्वचा, खुजली गले, नाख में खून, बंध हुआ कान, बहा हुआ नाक, गले में खराश, छींकने कर रहे नाक, रुआंसा और अस्थमा आधि हैं । बीज उप- उष्णकटिबंधीय और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वर्ष भर उगना कर सकते हैं। खारा स्प्रे अपनी नाक छिद्र को पराग से स्पष्ट करने में मदद करते हैं, साथ ही पतली करने के लिए मदद करने में और अपनी नाक में श्लेष्मा कम करने में मदद करते हैं। क्वरसिटिन एक फलेविनाईढ है जो अलर्जी के प्रति शरीर की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया पर एक प्रभाव है कि हिस्टमिन्स और अन्य रसायनों के शरीर की रिहाई को नियंत्रित करने के काम करते हैं । विशेष रूप से यह साइनस दर्द और अलर्जी की वजह होता जमाव को कम करने के लिए प्रभावित करता है । विटामिन सी और अंगूर बीज के संयुक्त में साथ निकालने, पराग अलर्जी के लक्षणों को कम करने की क्षमता भी काफी बढती है। एक गोल्डन सील टॉनिक में जीवाणुरोधी और कसैले गुण है। एक खारा नाक स्प्रे के साथ इस्तेमाल करने से गोल्डन सील बहुत ही पराग एलर्जी के लक्षणों को कम कर सकते हैं। अन्य सावधानियों निम्न प्रकार हैं. 1 अपने घर में खिड़कियों और दरवाजे बंद रखें, और एयर कंडीशनर चालु.रखें । 2. पराग के मौसम के दौरान कम से कम महीने में एक बार, अक्सर अपने एयर कंडीशनर फिल्टर बदलें. 3. अलर्जी की मौसम शुरू होने से पहले एक या दो चम्मच स्थानीय स्तर पर उत्पादित मधुमक्खी पराग मधु प्रति दिन खाएं जिसमें छोटी मात्रा के पराग शामिल है । शहद लेने से स्थानीय पराग के खिलाफ अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली शुरू करने में मदद मिलेगी ।

बैठक

के.क.अ.सं, नागपुर में दि 25.8.2014 को टी.एम.सी. एम.एम.1-आय.आर.एम.एच.डी.पी.एस की पुनरीक्षण बैठक आयोजित की गयी थी । डॉ.के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं., डॉ.डी.ब्लैस, प्रधान, कपास उत्पादन, डॉ.एम.वी.वेणुगोपालन, प्रधान, पी.एम.ई., डॉ.आर.बी.सिंगनडुबे, वार्दा से श्री.अतुल शर्मा , डॉ.सोलेंकी और गुजरात से डॉ.सी.के.पाटील, ओडिसा से डॉ.आर.के.पटनायक, कंढवा से डॉ.मेवडे, डॉ.सतीश पर्साय, श्री.बी.तुले एवं के.वी.के के कर्मचारियॉ बैठक में उपस्थित थे । बैठक का उद्देश्य आय.आर.एम.-एच.डी.पी.एस कार्यान्वयन प्रदर्शनों का पनरीक्षण करना है, हर एक जिले के परीक्षण/किसानों के संखया की सूची और फसल स्थिति जैसे अंकुरण प्रतिशत, फसल स्थिति एवं कार्यान्वयन को पुनरीक्षण करना आदि है ।

आफरिका पुनरीक्षण बैठक हेतु कपास प्रौद्योगिकी सहायता कार्यक्रम (टी.ए.पी)

के.क.अ.सं, नागपुर में दि.27.8.2014 को एक पुनरीक्षण बैठक आयोजित की गयी थी । डॉ.के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं., डॉ.डी.ब्लैस, प्रधान, कपास उत्पादन, डॉ.गौतम मजुमदार, डॉ.ए.के.कृष्णकुमार, कार्यकारिणी निदेशक, आय.एल.एफ.एस. और डॉ.मिलन शर्मा, प्रधान, आफरिका पहलों एवं उद्योग अनुसंधान , आय.एल.एफ.एस क्लस्टर विकास पहलों लिमिटेड आधि बैठक में उपस्थित थे। दूसरे अवस्था (फेस–दो) के वर्तमान तकनीकी सहायता कार्यक्रम और पांच नये आफ्रिकन देशों में उनके अनुमोदन के अनसार के कार्यक्रम का विस्तार संबंध के चर्चाएँ भी बैठक में लिए गये थे।

वर्षा आधारित कपास के उच्च घणत्व रोपण प्रणाली में प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबत्तूर द्वारा माईराडा, के.वी.के गोपिचेट्टिपालयम के सहयोग से विल्लिपुत्तूर एवं मातुर गावों, अंदियूर ब्लाक, गोबिचेट्टिपालेयम तालुका, ईरोड जिले में दि. 27.8.2014 को वर्षा आधारित कपास के लिए, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा विकसित हुआ उच्च घणत्व रोपण प्रणाली में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदर्शित किया गया । डॉ.बी.धाराजोति. प्रदान वैज्ञानिक एवं परियोजना के राज्य समन्वयक ने एच.डी.पी.एस. कपास, रोपण पद्धति, कपास उत्पादन एवं संरक्षण में अनुसरण किए जाने वाले समीक्षातमक कार्य के संबंध में विस्तार विवरण दिया । इसके अलावा उन्होंने किसानों को उचित कीटनाशक का उपयोग करने का सुझाव दिया। डॉ.एस.उषारानी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एच.डी.पी.एस के लाभ एवं कपास उत्पादन बनाए रखने में अनुसरण करने के पदध्तियों के बारे में बताया । उन्होंने विस्तार सेवाएं के संबंध में विवरण देने के बाद उनका उपयोग करने के लिए किसानों को अनुरोध किया । माईराडा के पदाधिकारियों, कृषि विज्ञान केंद्र, श्री.आर.डी.श्रीनिवासन, पौधा संरक्षण विशेषज्ञ, श्री.के.सेकर, मृदा विज्ञान विषेषज्ञ, श्री.एन.शिवप्पा, प्रबंधक एवं. श्री.तिरुमुरुगन, सहायक ने किसानों से संपर्क कर एच.डी.पी.एस. तहत कपास विकसित करने के लाभ के बारे में विवरण दिया एवं कार्यक्रम आयोजन में समन्वय किया । बाद में किसानों के क्षेत्र में प्रदर्शन का आयोजन किया गया एवं प्रदर्शन सामग्रियाँ उन्हे प्रदान किए गये थे। डॉ.आर.वेंकटेसन, श्री.टी.मुरलीसंकर एवं श्री.डबल्यू सामुवेल कृपाकरन, केंक.अ.सं. कोयंबत्तूर के वरिष्ठ अनुसंधान साथी कार्यक्रम के समन्वयक थे ।

अन्य गतिविधियाँ

डॉ.एस.माणिक्कम, प्रधान वैज्ञानिक (पौधा प्रजनन) दि.25.8.2014 को केंद्रीय कपास प्रौध्यौगिकी अनुसंधान संस्थान की प्रबंधन समिति की बैठक में सदस्य के रूप में भाग लिए थे।

के.क.अ.सं, नागपुर में पोला त्योहार का समारोह

के.क.अ.सं, नागपुर में पोला, जो एक वृषभ–पूजा त्योहार, दि. 25.8.2014 को आयोजित की गयी थी। पोला पितोरी अमावास्या (नवचंद्र दिन) में श्रवण महिने में होता है और महाराष्ट्र किसान हेतु एक महत्वपूर्ण त्योहार है । पार्म अनुभाग के वृषभ को सजाकर सींग को रंगाई कर गले में आभूषण से विभूषित किया जाता है। सबसे बूढ़ा वृषभ एक लकडे के फ्रेम से बांधा जाता है और उससे दो नीम के पेड के बीच में लगाए हुए आम के पत्ते के रस्सी को थोडना पडता है। डॉ.के.आर.क्रांति, निदेशक, डॉ.सैध्या क्रांति, प्रधान, कपास संरक्षण वुभाग, डॉ.डी.ब्लैस, प्रधान, कपास उत्पादन विभाग, वैज्ञानिक एवं कर्मचारियाँ इस समारोह में उपस्थित थे।

के.क.अ.सं, नागपुर में पोला त्योहार का समारोह

निर्मित एवं प्रकाशित: डॉ. के.आर.क्रांति, निदेशक, के.क.अ.सं, नागपुर
प्रमुख संपादक: डॉ. नंदिनी गोक्टे-नार्खडेकर
संपादकों: डॉ. जे.एन्नि शीबा, डॉ. विश्लेष नगरारे, डॉ. जे.अमुदा एवं डॉ. एम.शरवणन
जनसंचार माध्यम समर्थन एवं रुपांकन: डॉ. एम.सबेष एवं श्री. एस.सत्यकुमार
हिन्दी अनुवाद: श्रीमति. के.सुभश्री एवं डॉ. अ.हि.प्रकाश
निर्मित समर्थन: श्री. संजय कुश्वाहा

प्रमाण: कपास नई खोज अंक-4, खंड-8, 2014, भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रकाशन टिप्पणी: यह समाचार पत्र आनलाईन http://www.cicr.org.in/News Letter.html में उपलब्ध है।
कपास नई खोज एक खुला उपयोग कपास समाचार पत्र है ।

कपास नई खोज - के.क.अ.सं, समाचार पत्र केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक संवाद-पत्र.
कार्यालय: पांजरी, एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लॉन्ट के पास, वर्धा रोड, नागपुर- 441 108.
दूरभाष: 07103-275536 फैक्स: 07103-275529; E-mail: cicrnagpur@gmail.com